कुलगीत

गुणीजनों में सदा रहेगी जिसकी उन्नत ग्रीवा,
गरिमामय, महिमामय, मंगलमय, विश्वविद्यालय, रीवा ।

हंसों का आकाश ज्ञान के गरूड़ों का अंचल है,
विन्ध्याचल की शिखर धारियों का जो मीठा जल है,
जिसके अक्षय ज्ञानकोश की सीमा अटल अचल है,
मध्यदेश की मणि सहस्र दल कमल विन्ध्य अवनी का
गरिमामय . . .
गुणवंतों में गाई जाएँ जिसकी यश गाथाएँ,
उद्यमशील कुशल बालक, श्रम तपस्विनी बालाएँ,
सृजन भूमि विज्ञान ज्ञान की अपराजित शालाएँ,
घरों–घरों में जिनसे जलतीं अनगिन दीप शिखाएँ
गरिमामय . . .
दसों दिशाओं को ले जाएँ नई नई क्षमताएँ,
मानव तप से मानव श्रम से नया मनुष्य बनाएँ,
नए नए फूलों से इस दुनिया को चमन बनाएँ,
सभी निकायों संकायों में गीत यही हम गाएँ
गरिमामय . . .

प्रो. सुरेन्द्र भटनागर